સાબરમતી

नदीमुखेनैव समुद्रमाविशेत्

અંકઃ૦૧ | ૨૦૨૬

જાન્યુઆરી(પોષ)

ઊડવાનું પતંગ થઈ મારે,
ને ફરી ડાળમાં ફસાયો છું.

સાંકળિયું

1. **गूजरात विद्यापीठः सकारात्मक और रचनात्मक पहल की ओर बढ़ते कदम** 4
प्रो. आयुष्मान गोस्वामी

2. **રોજિંદા જીવનમાં ઉપયોગી સૂક્ષ્મ જીવો** 8
- પ્રીતિ શુક્લ

3. **કાકાસાહેબ કાલેલકરની પત્રપ્રસાદી 'સપ્રેમ શુભાશિષ'** 12
- ડૉ. ધ્વનિલ પારેખ

4. **નેપાળમાં 'Gen Z' આંદોલન: લોકશાહી માટે નવી દિશા અને પડકારો** 14
- શ્રી જિતેન્દ્ર ઢેબરીયા

5. **પ્રવૃત્તિ દર્પણ** 17
- શ્રી અદ્વૈતા દવે

6. **આગામી કાર્યક્રમો** 23

તંત્રી

ડૉ. હર્ષદ પટેલ

મુખ્ય સંપાદક

ડૉ. ધ્વનિલ પારેખ

સંપાદન મંડળ

ડૉ. ધારાબેન વઘાડિયા
ડૉ. વિક્રમસિંહ અમરાવત
ડૉ. નીતિન ઢાઢોદરા
શ્રી જિતેન્દ્ર ઢેબરીયા
શ્રી અદ્વૈતા દવે

સંપાદકીય લેખ

ગની દહીંવાલાની પંક્તિઓ યાદ આવે એવું વાતાવરણ છે -

"વસંતો આવતાં જાણે ચમનમાં લૂંટ ચાલી છે,

કોઈ રોકો નહીં તો આ ચમનની પાયમાલી છે."

વસંતનો જાદુ પથરાયો છે અને આકાશમાં રંગબેરંગી પતંગો પણ ઊડતાં દેખાય રહ્યાં છે. ટૂંકમાં, જાન્યુઆરીનું વાતાવરણ મનને પ્રસન્ન કરે એવું છે.

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠનું બીજું સત્ર કે જે વસંત પંચમી સત્ર તરીકે ઓળખાય છે એનો પ્રારંભ પણ જાન્યુઆરીમાં થાય છે. વિદ્યાર્થીઓ પણ વસંતના પ્રભાવ હેઠળ હોય એવું લાગે છે. પ્રકૃતિનો સૌથી સુંદર આવિર્ભાવ એટલે વસંત. કાલિદાસથી માંડીને વિશ્વના ઉત્તમ કવિઓએ આ વસંતનો મહિમા મનભરીને ગાયો છે.

આ અંકમાં એક વિશેષ લેખ આયુષ્માન ગોસ્વામીનો રજૂ કર્યો છે. એક વર્ષ પૂર્વે એમણે અવલોકેલી ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ અને એક વર્ષ બાદ પુન: નિહાળેલી વિદ્યાપીઠ, એ બંનેમાં આવેલાં ધરખમ પરિવર્તન વિશે એમણે અનન્ય ભાવે સ્તુતિ કરી છે. જિતેન્દ્ર ઢેબરિયાએ વિશ્વમાં ઝેન ઝી પેઢીમાં જોવાં મળતાં વલણોનું વિશ્લેષણ રજૂ કર્યું છે. સ્વાભાવિક છે કે થોડા વખત પહેલા નેપાળની ઝેન ઝી પેઢીએ જે બળવો પોકાર્યો હતો એ એની પાછળ કારણભૂત છે. રોજબરોજના જીવનમાં આપણે અનેક સૂક્ષ્મ જીવોના સંપર્કમાં આવીએ છીએ. એમાં કયા સૂક્ષ્મ જીવો આપણા માટે ઉપયોગી છે, એની ચર્ચા પ્રીતિબેન શુક્લે કરી છે. કાકાસાહેબ કાલેલકર અને વિદ્યાપીઠનો સંબંધ અવિનાભાવી રહ્યો છે. ' સપ્રેમ શુભાશિષ ' એમના અત્યાર સુધી પ્રગટ ન થયા હોય એવા પત્રોનો સંગ્રહ છે. આ પત્રો એમણે જેને પોતાની દીકરી માની હતી એ કુસુમ બહેનને સંબોધીને લખ્યા હતા. આ સંગ્રહનો પરિચય ધ્વનિલ પારેખે કરાવ્યો છે.

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના વિદ્યાર્થીઓ સેવાકીય પ્રવૃત્તિમાં પણ અગ્રેસર હોય છે. ઉતરાણના દિવસોમાં અબોલ પક્ષીઓ માંજાને કારણે ઘવાયા હોય તો એને બચાવવાનું ઉમદા કાર્ય પણ વિદ્યાર્થીઓએ કર્યું છે. વળી, અન્ય અનેક પ્રવૃત્તિઓમાં પણ આ વિદ્યાર્થીઓ હોંશભેર ભાગ લેતાં હોય છે. ૨૩ જાન્યુઆરીએ વસંત પંચમીના દિવસે કોચરબ આશ્રમ ખાતે એક વિશિષ્ટ કવિસંમેલનનું આયોજન પણ કરવામાં આવ્યું હતું. આ કવિસંમેલનમાં વિદ્યાપીઠના અને અન્ય કવિઓએ કાવ્યપાઠ કર્યો હતો. ભાષાઓ અને સાહિત્ય વિદ્યાશાખા દ્વારા યોજાયેલા આ ઉપક્રમમાં સ્વયં પાકનું આયોજન પણ કરવામાં આવ્યું હતું.

વસંતનો મહિમા કરીએ એટલો ઓછો છે ત્યારે મનોજ ખંડેરિયાના એક શે'રથી વાત પૂરી કરીએ -

" આ ડાળ ડાળ જાણે કે રસ્તા વસંતના,

ફૂલો એ બીજું કંઇ નથી પગલાં વસંતના."

ડૉ. ધ્વનિલ પારેખ
ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ, અમદાવાદ

गूजरात विद्यापीठः सकारात्मक और रचनात्मक पहल की ओर बढ़ते कदम

प्रो. आयुष्मान गोस्वामी
अध्यक्ष, विस्तार शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एनसीईआरटी). अजमेर

25 जनवरी 2025 के दिन गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद को पहली बार प्रत्यक्ष रूप से देखने का आत्मगौरव प्राप्त हुआ। यह तो सर्वविदित है कि 18 जनवरी 1920 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा इस ऐतिहासिक विद्यापीठ की स्थापना की गई थी। तब से लेकर आज तक इस विद्यापीठ ने गाँधी दर्शन और जीवन को शिक्षा के साथ जोड़ने के ऐसे असंख्यक प्रयास किये हैं जिनको न केवल शिक्षा संस्थानों के लिए आदर्श माना जा सकता है अपितु शिक्षा और समाज के परस्पर संबंध और इस पर आधारित रचनात्मकता की एक अद्भुत मिसाल भी कहा जा सकता है। संपूर्ण परिसर एक ओर प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है तो दूसरी ओर अकादमिक गरिमा चारों ओर बिखरी दिखाई देती है। इसका श्रेय गाँधी जी के चिंतन और दर्शन पर आधारित इस विद्यापीठ की कार्य संस्कृति को और इसको जीने वाले यहाँ के संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों और समस्त कार्मिकों को दिया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में अपनी एक विशेष पहचान रखने वाली विद्यापीठ न केवल गुजरात राज्य के लिए बल्कि भारत और विश्व की सभी संस्थाओं के लिए ऐसे आदर्श प्रस्तुत करती है जिन्हें जीवन में उतारकर 'जीवन' और 'जीने के उद्देश्य' दोनों को ही सार्थक बनाया जा सकता है। विद्यापीठ के संपूर्ण परिसर का एक औपचारिक भ्रमण किया तो पाया कि भारत की सांस्कृतिक आत्मा सही अर्थों में ऐसे शिक्षण संस्थाओं में खोजी जा सकती है जहाँ 'भारत बोध' के साथ 'भारत पर गर्व करना' और 'भारत के लिए कर्म करना' सीखा जा सकता है। एक दिन का प्रवास भ्रमण की दृष्टि से कुछ कम अवश्य था पर कहीं ना कहीं मन के अंदर एक विचार बार-बार उमड़ रहा था कि इस प्राचीन विरासत को संजोने वाली संस्था किस रूप में अपने अतीत के वैभव को वर्तमान की आशाओं और आकांक्षाओं के साथ पूरा कर सकेगी। इसके लिए किस स्तर के पुरुषार्थ और सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता होगी जिससे कि शिक्षा जगत में नये प्रतिमान स्थापित किये जा सकें। इस विचार को मन में लिए हुए पुनः इस आशा के साथ लौट आया कि फिर कभी अवसर मिलेगा तो गूजरात विद्यापीठ को नजदीक से देखकर कुछ सीखने और उसे सच्चाई के साथ जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलेगी।

समय के साथ ऐसा अवसर मेरे जीवन में पुनः 29 जनवरी 2026 को आया जब इस सांस्कृतिक गौरव की विद्यापीठ को बिना किसी औपचारिकता के गहनता के साथ समझने का अवसर मिला। एक वर्ष के अंदर किसी शिक्षण संस्था में इतना व्यापक और रचनात्मक परिवर्तन जीवन में पहली बार देखने को मिला। संस्था के मुख्य द्वार से लगी मुख्य दीवार अंदर और बाहर दोनों ही तरफ से सौंदर्य के साथ-साथ जीवन में उच्चतर आदर्शों को ग्रहण करने की प्रेरणा देती है। कला के किसी भी पक्ष को कितने सुंदर रूप में किसी नैतिक संदेश के साथ जोडकर प्रस्तुत किया जा सकता है इसका उदाहरण इस लम्बी दीवार पर देखा जा सकता है। संदेश चाहे स्वच्छता का हो या स्वदेशी की भावना हो, विकसित भारत के संकल्प की साधना हो या सांस्कृतिक विविधता, जीवन में परिश्रम का महत्त्व हो या विनम्रता के साथ अपने कर्तव्यों का बोध हो, ऐसे कितने ही आदर्शों को सुंदर चित्रों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम

से इस दीवार पर देखा जा सकता है। बचपन में सुना था कि जहाँ दीवार खड़ी हो जाती है वहाँ पर सीमाएँ बंध जाती हैं। लेकिन विद्यापीठ की दीवार को देखकर लगा कि यहाँ सीखने और प्रेरणा लेने की कोई सीमा नहीं है न ही कला की अभिव्यक्ति को किसी सीमा में बाँधा गया है। मुख्य द्वार से आगे बढ़ने पर महात्मा गाँधी के जीवन से जुड़े चरखे को एक बड़े प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। गाँधी जी के लिए चरखा स्वदेशी और स्वावलम्बन का बहुत वड़ा साधन रहा था। यहाँ पर स्वदेशी और स्वावलम्बन दोनों को आज भी बहुत प्रभावी रूप में शिक्षा के साथ जीवन में उतारने और ऐसे प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है जो सदैव अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहकर प्रगति के पथ पर अग्रसर होने का नाम है।

विद्यापीठ परिसर में खादी उत्पादों की बिक्री का एक बहुत सुंदर केन्द्र है जहाँ पर आज के युवा की सोच और पसंद के अनुसार पहनावे से लेकर ऐसे बहुत से उत्पाद है जो हर पीढ़ी को पसंद आयेंगे। इन उत्पादों में शुद्ध भारतीयता के साथ स्थानीय कौशल को निखारने और उसका संवर्धन करने का रचनात्मक प्रयास देखा जा सकता है। विद्यार्थियों के द्वारा बहुतायत में खादी वस्त्रों का ही प्रयोग रोज के पहनावे के रूप में किया जाता है। इस तरह का दृष्य आज की शिक्षण संस्थाओं में बहुत कम देखने को मिलता है। पहनावा हमारी सोच का भी प्रतीक है और समाज के प्रति हमारे दृष्टिकोण को समझने में भी सहायता करता है। जब गूजरात विद्यापीठ के विद्यार्थियों को खादी वस्त्रों में देंखा तो लगा कि शिक्षा केवल किताबों में पढ़ने के लिए या परीक्षा पास करने के लिए नहीं होती। यह तो जीवन का वह पक्ष होता है जो हमारे साथ हर कदम पर और हर गंतव्य तक साथ जाता है।

गूजरात विद्यापीठ परिसर के अंदर प्राकृतिक सौंदर्य एक विशेष गरिमा के साथ अनुभव किया जा सकता है। पक्षियों का कलरव कभी पेड़ों की शाखाओं पर तो कभी उनसे कुछ ऊपर आकाश में उड़ान भरते हुए सहज ही सुना जा सकता है। वनस्पति का वैविध्य एक परिसर के अंदर कितना व्यापक हो सकता है इसका अंदाजा इस परिसर के एक भ्रमण से लगाया जा सकता है। पौधे, फूलों से लदी लताए, वृक्ष और आकाश को छूते ऊँचे- ऊँचे विशालकाय दरख्त एक ओर किसी राहगीर को मनभावन सुंदर छटा निहारने के लिए सहज में अपनी ओर आकर्षित करती है तो दूसरी ओर इन वृक्षों के तनों की चौड़ाई देखते ही आश्चर्य पैदा करती है। ये सभी किसी पर्यावरण प्रेमी के लिए बहुत जिज्ञासा का विषय तो हो ही सकते है साथ ही हम जैसे सामान्य जन के लिए सौंदर्य की अद्भुत छटा का अनुपम उदाहरण कहे जा सकते हैं। ऐसा नहीं है कि इस प्राकृतिक सौंदर्य को केवल कुछ गिने-चुने कार्मिकों द्वारा सँवारा जा रहा हो बल्कि हर कोना या कहें परिसर की सड़क के हर किनारे पर कोई ना कोई विद्यापीठ परिवार का सदस्य इसके लिए अपना योगदान देता देखा जा सकता है। विशेषकर यहाँ के विद्यार्थी सक्रिय रूप से सब्जियों की खेती करते देखे जा सकते है। धनिया, पालक, मेथी, मिर्च, हरी प्याज, इत्यादि कितनी ही सब्जियों के खेत पर विद्यार्थियों को कार्य करते हुए देखा जा सकता है। यह खेत परिसर के अंदर ही है और सब्जियों की खुशबू और ताजगी यह बता देती है कि इनको उगाने के लिए कितना परिश्रम और समर्पण किया गया होगा। विद्यापीठ परिसर में ही स्वच्छता ही स्वच्छता

को लेकर हर समय कोई न कोई विशेष अभियान चलाया जाता है और विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकगण इस कार्य में तन्मयता के साथ लगे हुए देखे जा सकते है। विद्यापीठ की विभिन्न इमारतें एक परम्परागत स्थापत्य का सुंदर उदाहरण तो है साथ ही किसी हैरिटेज से कम नहीं है। इस स्थान की ऐतिहासिक गरिमा का सम्मान करते हुए इमारतों के सौदर्यीकरण में तन्मयता के साथ हर विद्यार्थी और हर विभाग के प्रत्येक शिक्षक का योगदान समझने का अवसर तब मिला जब संतोष भरे चेहरे पर पसीने की बूँदों को लिये उन विद्यार्थियों से बातचीत करने का मौका मिला जिनके लिए इस विद्यापीठ का छात्र होना गर्व का विषय है।

सडक के दोनों ओर सुंदर कलाकृतियों से सजावट सहज में ही आकर्षित करती है, वहीं दीवारों पर एक विशेष पैटर्न के आधार पर परम्परागत चित्रकारी ह्वे स्थापत्य की इस विरासत के साथ कला के अद्वितीय जोड़ को समझने में मदद करती है। इमारत की कुछ दीवारों का प्रयोग बहुत ही सुंदर चित्रों को बनाने में इस प्रकार किया गया है कि आप कई दिशाओं से उन चित्रों के सौंदर्य को देख सकते हैं। जीवन के उच्च आदर्श पुस्तकों से या पुस्तकालयों से व्यावहारिक जीवन में किस तरह साकार हो सकते है इसका एक उदाहरण विद्यापीठ के एक श्रेष्ठ अभ्यास के द्वारा देखा जा सकता है। यहाँ पर विद्यार्थियों द्वारा संकाय अथवा विभाग के आधार पर समय-समय पर 'स्वयंपाक' का आयोजन किया जाता है। स्वयंपाक का एक उद्देश्य विद्यार्थियों द्वारा पौष्टिक और परम्परागत भोजन संस्थान परिसर में ही परस्पर सहयोग से स्वयं तैयार करना है तथा इसमें भी अन्न की विविधता को समाहित करने का प्रयास रहता है। मैने अपने भ्रमण के दिन सायंकाल विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये उस सादगीपूर्ण और स्वास्थ्यवर्धक भोजन को ग्रहण किया जिसमें विद्यापीठ के कुलगुरु, विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ संकाय सदस्य, प्रशासनिक अधिकारीगण, विद्यार्थी और अन्य कार्मिक उपस्थित थे। स्वयंपाक का यह कार्यक्रम सब्जी काटने से लेकर भोजन बनाकर अलग-अलग बर्तनों में रखकर एक व्यवस्थित रूप में परोसने के लिए तैयार करने और फिर पंक्तिबद्ध होकर भोजन लेकर सामूहिक रूप से धरती पर बैठकर संतोष के साथ ग्रहण करने की प्रक्रिया तो है साथ ही भोजन से जुड़े उस दिव्य भाव को जीवन में उतारने का एक उदाहरण भी है जिसमें य वैदिक मंत्र याद आता है जिसमे ऋषि ने कहा है – ॐ सहनाववतु सहनो भुनक्तु। सहवीर्य करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः – भोजन समापन के बाद सभी विद्यार्थियों द्वारा अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए निर्धारित स्थान पर सफाई करते हुए भोजन के लिए प्रयोग किये गये बर्तनों को यथा स्थान पर पहुँचाने और धोने के साथ पुनः निर्धारित जगह पर व्यवस्थित रूप में जमाने का कार्य भी किया गया। सामूहिक प्रयास और शुद्ध भाव से तैयार किये गये भोजन को ग्रहण करने के पश्चात् कुछ भ्रमण करते हुए आगे की ओर बढ़ते हुए संगीत की मधुर ध्वनि सुनाई दी। सुर-ताल के साथ गायन और इसमें वाद्य यंत्रों का लय यह अभिव्यक्त कर रहा था कि संगीत विद्यापीठ परिसर के सौन्दर्य का बहुत बड़ा आधार है। संगीत कक्ष के बाहर से देखा तो पाया कि शिक्षकों के साथ विद्यार्थी संगीत साधना में रत् है और उनके लिए किसी कक्षा के टाइम-टेबल में बंधा औपचारिक संगीत महत्त्व नहीं रखता है। जिसका महत्त्व है, वह है संगीत को मन और आत्मा के साथ आत्मसात करते हुए 'नादब्रह्म' को साधना। यह देखने पर समझ में आया कि शिक्षा का सही अर्थ नैतिकता और

सौंदर्यबोध को आचरण में उतारने से है। सम्भवतया गाँधी जी का जीवन-दर्शन और भी आधिक व्यावहारिक रूप में गूजरात विद्यापीठ में जीवन्त होता देखा जा सकता है।

एक वर्ष की अवधि में इतनी तीव्रता के साथ इतने सारे परिवर्तन विद्यापीठ के अंदर देखने को मिले जो परम्परा और आधुनिकता या कहें विरासत और विकास दोनों को साथ-साथ लेकर आगे बढ़ने का एक दृढ संकल्प कहा जा सकता। विद्यापीठ में स्नातक संघ के कार्य हो या खादी सूत्र के माध्यम से हुनर हाथों को आत्मनिर्भरता की अनुभूति कराना हो या कि स्पोटर्स कॉम्प्लेक्स के द्वारा युवा शक्ति को सार्थक दिशा देना हो, इसी प्रकार सौर ऊर्जा से शत-प्रतिशत प्रकाशित आदित्य की पहल हो या कुलाधिपति शिष्य अभ्यास लब्धि अर्थात् कुशल योजना हो या कि डीजि विद्यापीठ की पहल हो या इसी तरह गायन, वादन, नृत्य और चित्रकला के आराधना मन्दिर के रूप में कला मन्दिर के प्रयास हों, ये सभी एक वर्ष में प्राप्त की गयी वे उपलब्धियां है जो विद्यापीठ के कुशल नेतृत्व, प्रभावी समन्वयन, परस्पर सहयोग और सामूहिक समर्पण का परिणाम है। अन्नधेनु, संविधान मंदिर और व्यावसायिक सज्जता मंदिर भी ऐसे ही प्रयास हैं जिनके द्वारा विद्यापीठ की अकादमिक और प्रशासनिक क्षमताओं में अद्वितीय वृद्धि देखी जा सकती है। ज्ञान की विभिन्न शाखाओं या अनुशासनों को किस प्रकार एक परम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समावेशित किया जा सकता है इसका एक अनुपम उदाहरण विद्यापीठ प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 जिस भारत केन्द्रित शिक्षा की बात करती है और जिसके आधार में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा में समाविष्ट करने की अनुशंसा करती, उसे जीवन का प्रत्यक्ष उदाहरण बनाते हुए विद्यापीठ द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। सम्पूर्ण विद्यापीठ परिवार के लिए मेरी मंगल प्रार्थना यही है – शुभास्ते पन्थानः सन्तु।

રોજિંદા જીવનમાં ઉપયોગી સૂક્ષ્મ જીવો

-પ્રીતિ શુક્લ

પરિચય: સૂક્ષ્મ જીવો (Microorganisms) એ એવા જીવન તત્ત્વો છે જે સૂક્ષ્મ દૃષ્ટિ દ્વારા જ જોવા મળે છે. બેક્ટેરિયા, ફૂગ, આર્કિયા, પ્રોટોઝોઆ, અને વાયરસો મુખ્ય તત્ત્વો છે. લોકો મોટાભાગે સૂક્ષ્મ જીવોને રોગજનક માને છે, પરંતુ વાસ્તવમાં તેઓ આપણા રોજિંદા જીવનમાં અનેક રીતે મદદરૂપ છે. ખાદ્ય, આરોગ્ય, કૃષિ, ઉદ્યોગ અને પર્યાવરણીય સંરક્ષણમાં તેમની ઉપયોગીતા વિશ્વસનીય છે.

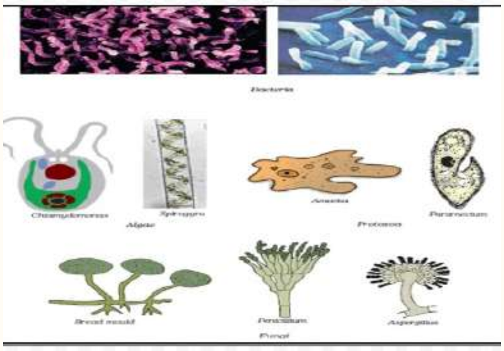

Types of Microorganisms

ખાદ્ય ઉદ્યોગમાં ઉપયોગ

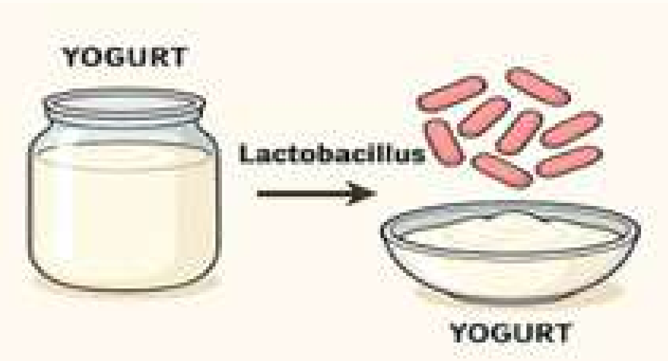

Lactobacillus દ્વારા દહીંનું નિર્માણ

ફર્મેન્ટેશન (Fermentation):

- દહીં, છાશ, ઢોકળા, ઇડલી, ડોસા, સોયા સોસ, બ્રેડ વગેરે ખાદ્ય પદાર્થો તૈયાર કરવા માટે સૂક્ષ્મ જીવોનો ઉપયોગ થાય છે.

ઉદાહરણ:

- લેક્ટોબેસિલસ બેક્ટેરિયા દહીં બનાવવામાં મદદ કરે છે; તે લેક્ટિક એસિડ ઉત્પન્ન કરે છે જે દહીંને ખાટું અને પાચક બનાવે છે.

- સેક્રોમાયસિસ સેર્વિસીય (Saccharomyces cerevisiae) -નો ઉપયોગ બ્રેડ, બીયર અને વાઇન બનાવવામાં થાય છે.

ખાદ્ય ઉદ્યોગમાં ઉપયોગ

સ્વાસ્થ્ય ફાયદા:

- પ્રોબાયોટિક ફર્મેન્ટેડ ખાદ્ય પેટની તંદુરસ્તી માટે અને પાચનક્રિયા સુધારવા માટે ઉપયોગી છે.
- ફર્મેન્ટેડ ખાદ્યમાં વિટામિન B અને અસંખ્ય એન્ઝાઇમ્સ ઉત્પન્ન થાય છે.

આરોગ્ય અને દવાઓમાં ઉપયોગ

એન્ટીબાયોટિક્સ:

- ઘણી ફૂગ અને બેક્ટેરિયા જીવનરક્ષક દવાઓ (એન્ટીબાયોટિક્સ) ઉત્પન્ન કરે છે.
  ઉદાહરણ: પેનીસિલિયમ નોટેટમ (Penicillium notatum) પેનીસિલિન બનાવે છે, જે બેક્ટેરિયલ ઇન્ફેક્શનને રોકે છે.

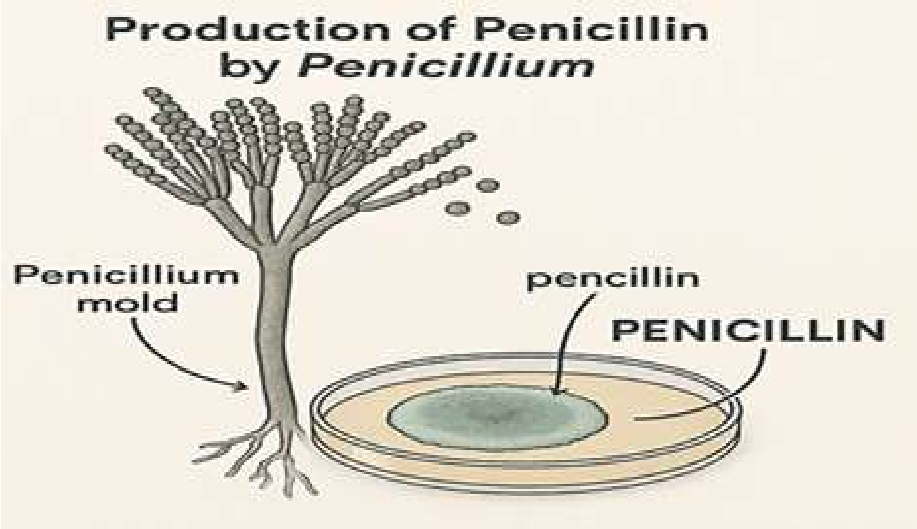

- લેક્ટોબેસિલસ, બિફિડોબેક્ટેરિયા જેવા સૂક્ષ્મ જીવો પેટના ફાયદાકારક બેક્ટેરિયાને સંતુલિત રાખે છે.

પ્રોબાયોટિક્સ અને માનવ પાચનતંત્ર

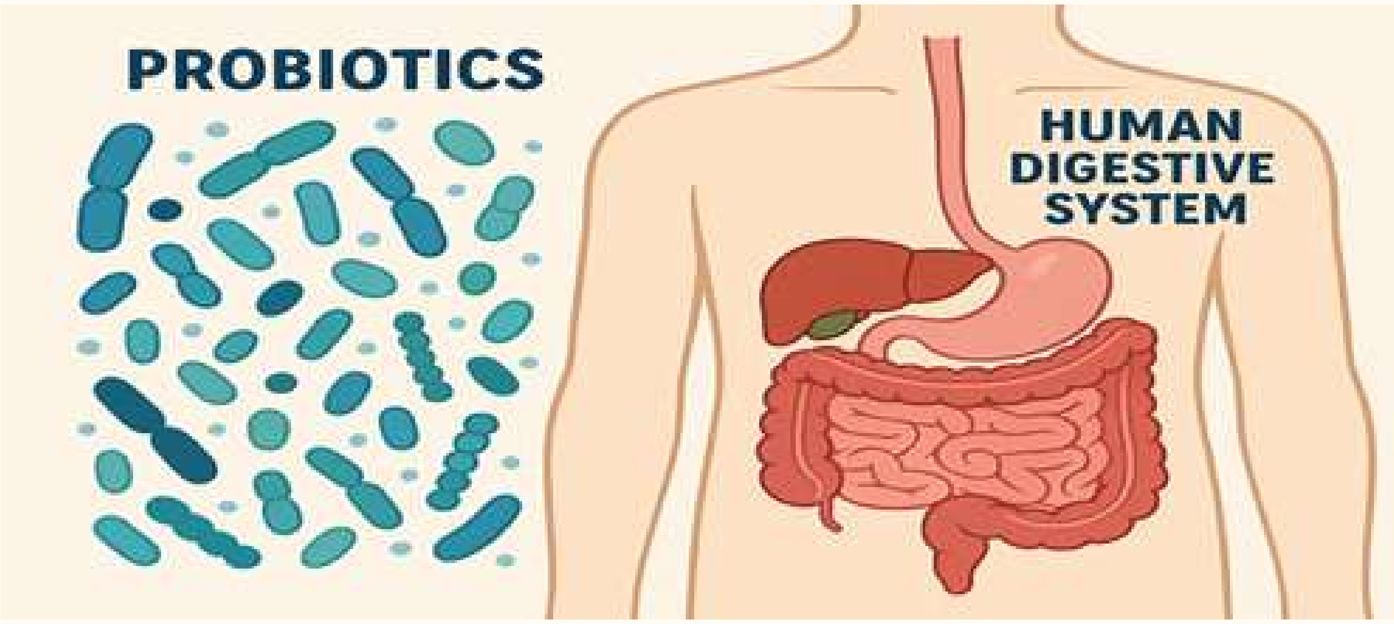

- રોગપ્રતિકારક શક્તિ વધારવામાં અને ડાયેરિયા, કબજિયાત, આંતરડાનાં ઇન્ફેક્શન સામે રક્ષણ કરવામાં મદદરૂપ છે.

કેસ સ્ટડી

- ઉદાહરણ: દહીં નિયમિત ખાવાથી શિશુઓ અને વયસ્કોમાં પાચનતંત્રના અનેક પ્રશ્નો ઓછા થયા છે.

કૃષિ અને જમીન ઉદ્યોગમાં ઉપયોગ

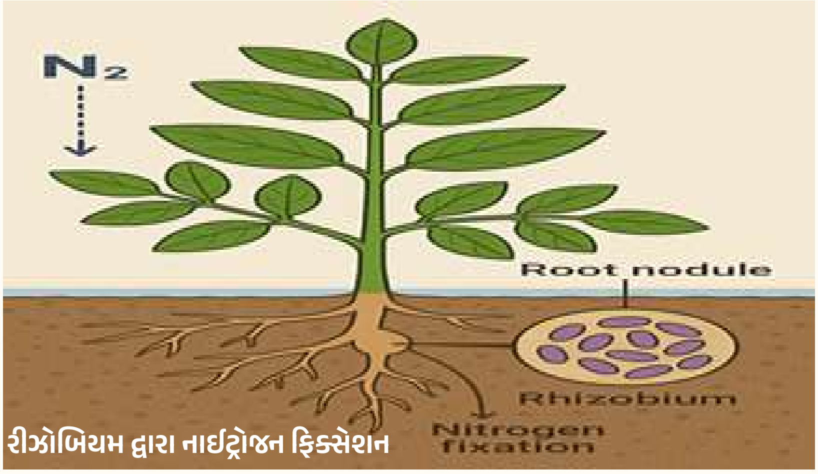

રીઝોબિયમ દ્વારા નાઇટ્રોજન ફિક્સેશન

નાઇટ્રોજન ફિક્સેશન:

- રીઝોબિયમ બેક્ટેરિયા મટરની જાડાબીલી પાંદડીઓમાં("in the root nodules of legumes") નાઇટ્રોજનને અટકાવીને જમીનના પોષણને સુધારે છે.
- આ બેક્ટેરિયા રાસાયણિક ખાતર ઓછું કરવામાં મદદરૂપ છે.

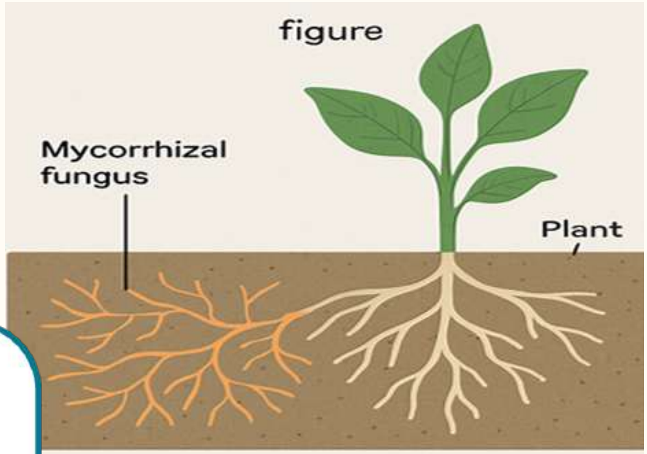

બાયોફર્ટિલાઇઝર અને પેટ્રોલિફાઇંગ:

- સૂક્ષ્મ જીવો જમીનનો પીએચ સંતુલિત કરે છે અને પોષક તત્ત્વોને છોડ માટે ઉપલબ્ધ કરે છે.

માઈકોરાઈઝા ફૂગ અને છોડ વચ્ચેનું સહજીવન
કચરા અને બાયોગેસ ઉત્પાદન માટે ઇન્ફ્રાસ્ટ્રક્ચર બનાવે છે.
ઉદાહરણ:
ફ્યુઝેરિયમ અને માઈકોરિઝા ફૂગો વૃક્ષોના મૂળ તંત્રને મજબૂત કરે છે અને જમીનની ભીનાશ રહે છે.

ઉદ્યોગ અને બાયોઇન્ડસ્ટ્રીમાં ઉપયોગ

એન્ઝાઇમ અને બાયોકેમિકલ ઉત્પાદનો:

- સૂક્ષ્મ જીવો એન્ઝાઇમ (જેમ કે અમાઈલેઝ, પ્રોટિએઝ) ઉત્પન્ન કરે છે જે ફૂડ, ડિટર્જન્ટ અને ફાર્માસ્યુટિકલમાં વપરાય છે.
- દ્રાવક, લેક્ટોઝ મોડીફાયર અને બાયોરીમેડીએશનમાં ઉપયોગ થાય છે.

જૈવિક સંશોધન (Biotechnology):

- સૂક્ષ્મ જીવો જીનોમ એન્જિનિયરિંગ, વેક્સિન, દવાઓ અને હોર્મોન ઉત્પાદનમાં મહત્ત્વપૂર્ણ છે.

E. coli producing insulin

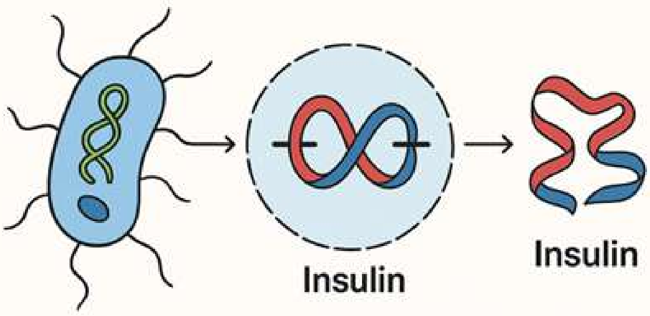

ઉદાહરણ:

- ઈન્સ્યુલિનનું ઉત્પાદન E.coli બેક્ટેરિયા દ્વારા થાય છે.
- વાઇન અને બીયર ઉદ્યોગમાં Saccharomyces નો ઉપયોગ થાય છે.

પર્યાવરણ અને સાફ સફાઈ માટે સૂક્ષ્મ જીવો કચરાનો નાશ (Waste Degradation)

- બાયો ડિગ્રેડેશનમાં સૂક્ષ્મ જીવોનો ઉપયોગ થતો હોય છે, જેમ કે પેટ્રોલિયમ ડમ્પિંગ અને કેમિકલ વેસ્ટને નાશ કરવો.

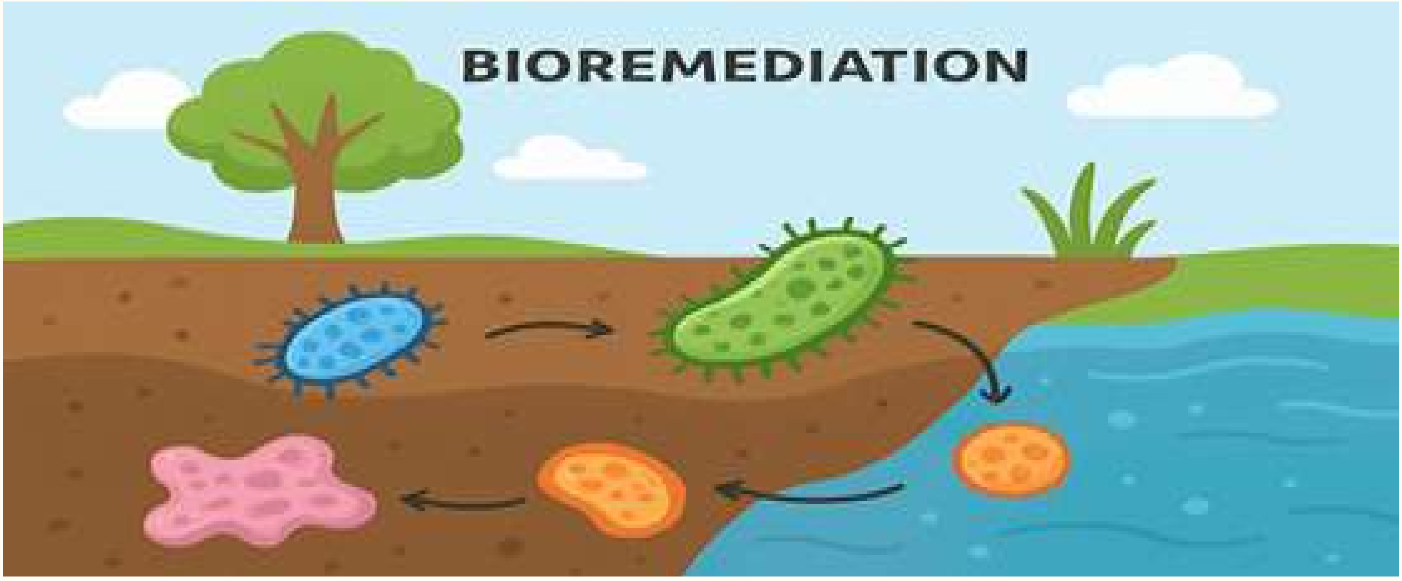

જીવજૈવિક પ્રદૂષણ નિયંત્રણ (Bioremediation):

- Pseudomonas પ્રકારના બેક્ટેરિયા તેલના દૂષણને વિઘટિત કરે છે.
- White rot fungi લાકડાના કેમિકલ બાયપ્રોડક્ટને દૂર કરે છે.

પર્યાવરણ માટે ફાયદો:

સૂક્ષ્મ જીવો પર્યાવરણને શુદ્ધ રાખે છે અને પ્રાકૃતિક સાયકલ જાળવવામાં મદદરૂપ છે.

નિષ્કર્ષ:

સૂક્ષ્મ જીવો આપણા રોજિંદા જીવનમાં દેખાતા નથી, પરંતુ તેઓ ખાદ્ય, આરોગ્ય, કૃષિ, ઉદ્યોગ અને પર્યાવરણના સંરક્ષણમાં મહત્ત્વના શિલ્પકાર છે. યોગ્ય જ્ઞાન અને નિયંત્રિત ઉપયોગ દ્વારા, આપણે સૂક્ષ્મ જીવોના લાભોને સરળતાથી પ્રાપ્ત કરી શકીએ છીએ.

લેખનો વિશેષ ઉદ્દેશ:

આ લેખ વિદ્યાર્થી અને સામાન્ય લોકોને સૂક્ષ્મ જીવોના પ્રતિકારક અને ઉપયોગી પાસાઓ સમજાવવા માટે લખાયો છે.

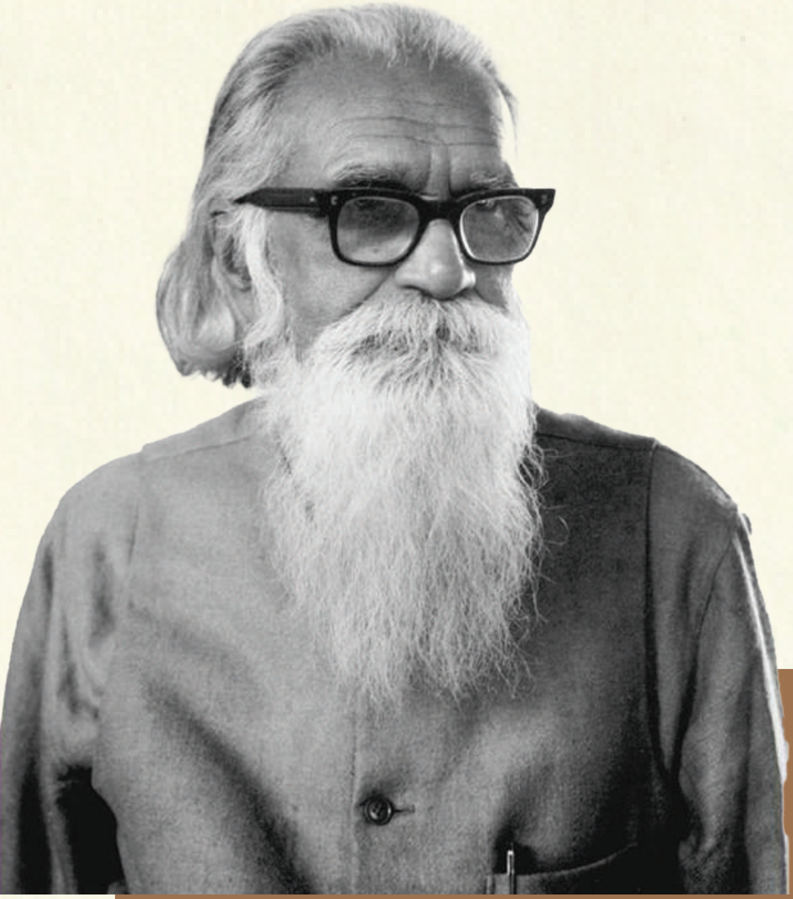

કાકાસાહેબ કાલેલકરની પત્રપ્રસાદી 'સપ્રેમ શુભાશિષ'

ડૉ. ધ્વનિલ પારેખ

ગાંધીયુગના ગાંધીજી સહિતના લેખકો, ચિંતકોની એક લાક્ષણિકતા એ રહી છે, કે નિયમિત પત્રલેખન અથવા ડાયરી લેખન. મહાદેવભાઈની ડાયરી એ રીતે એક બહુમૂલ્ય દસ્તાવેજ છે. કાકાસાહેબ કાલેલકરના પત્રો પણ એ રીતે મહત્ત્વ ધરાવે છે. પોતાની શિષ્યા કુસુમને લખેલા પત્રોનો સંગ્રહ છે 'સપ્રેમ શુભાશિષ.' આ પત્રોનું સંકલન સ્વયં કુસુમ બહેને કરેલું છે.

કુસુમ બહેને લખેલી પ્રસ્તાવનામાંથી ખ્યાલ આવે છે, કે સાચા ગુરુની શોધમાં એ ભટકતાં હતાં અને શ્યામસુંદર શુક્લની મદદથી તેઓ કાકાસાહેબના સંપર્કમાં આવે છે. પહેલી મુલાકાતનું વર્ણન કુસુમબહેન આ શબ્દોમાં કરે છે, "કાકાસાહેબને જોતાં જ હું ભાવવિભોર થઈ ગઈ. જાણે મારા દિવાસ્વપ્નમાં યોગીએ દર્શન દીધાં એવી મને અનુભૂતિ થઈ." (પા. ૦૫) કાકાસાહેબના સાંનિધ્યમાં ૨૩ વર્ષની ઉંમરે કુસુમબહેન જોડાયાં અને ત્યારે કાકાસાહેબની ઉંમર ૮૧ વર્ષ. ૧૬ વર્ષ કાકાસાહેબ સાથે રહ્યાં. અહીં જે પત્રો પસંદ કરાયા છે, એનો સમયગાળો ૧૯૬૬થી ૧૯૭૯ દરમિયાન છે. કુસુમબહેન ૧૯૬૫માં કાકાસાહેબ પાસે આવે છે અને ૧૯૬૬થી કાકાસાહેબ અને કુસુમબહેન વચ્ચે સતત પત્રવ્યવહાર ચાલે છે. પરંતુ આ પુસ્તકમાં એકપક્ષીય કાકાસાહેબના જ પત્રો છે. કુસુમબહેને શું લખ્યું એ જાણી શકાતું નથી. ક્યારેક કાકાસાહેબે જેમને દીકરી માનેલાં એ સરોજબહેન નાણાવટીએ કુસુમબહેનને લખેલાં લઘુપત્રોનો સમાવેશ થયો છે.

કાકાસાહેબે આ પત્રો ચોક્કસ હેતુસર કુસુમબહેનને લખ્યાં હોય એવું પુસ્તકમાંથી પસાર થયા પછી લાગે છે. કુસુમબહેનની સર્વાંગીણ કેળવણી કરવાનો કાકાસાહેબનો હેતુ રહ્યો છે. એટલે અહીં કુસુમબહેનના મનમાં જે પ્રશ્નો ઉઠે, જિજ્ઞાસા જાગે, એના ઉત્તરો કાકાસાહેબ આપે છે. ટૂંકમાં કહીએ તો કાકાસાહેબે પત્ર દ્વારા કુસુમબહેનની કેળવણી કરી છે. કેળવણીનાં લક્ષણ આ રીતે કાકાસાહેબ બતાવે છે, "સાચા કેળવણીકાર પાસે ઉત્તમ ધીરજ હોવી જોઈએ. એક બાળકની એક બાજુ જલદી વિકાસ પામે, બીજી બાજુ ખીલતાં વાર લાગે તો શિક્ષકમાં અને સાથીઓમાં ધીરજ હોવી જોઈએ. બાળકનું અપમાન કરવાથી તેનો વિકાસ કુંઠિત થાય છે." (પા. ૧૦) સહજ, સરળ અને દૃષ્ટાંત દ્વારા કાકાસાહેબ એકએક મુદ્દાને સ્પષ્ટ કરતા જાય છે એ આ પુસ્તકની વિશેષતા છે.

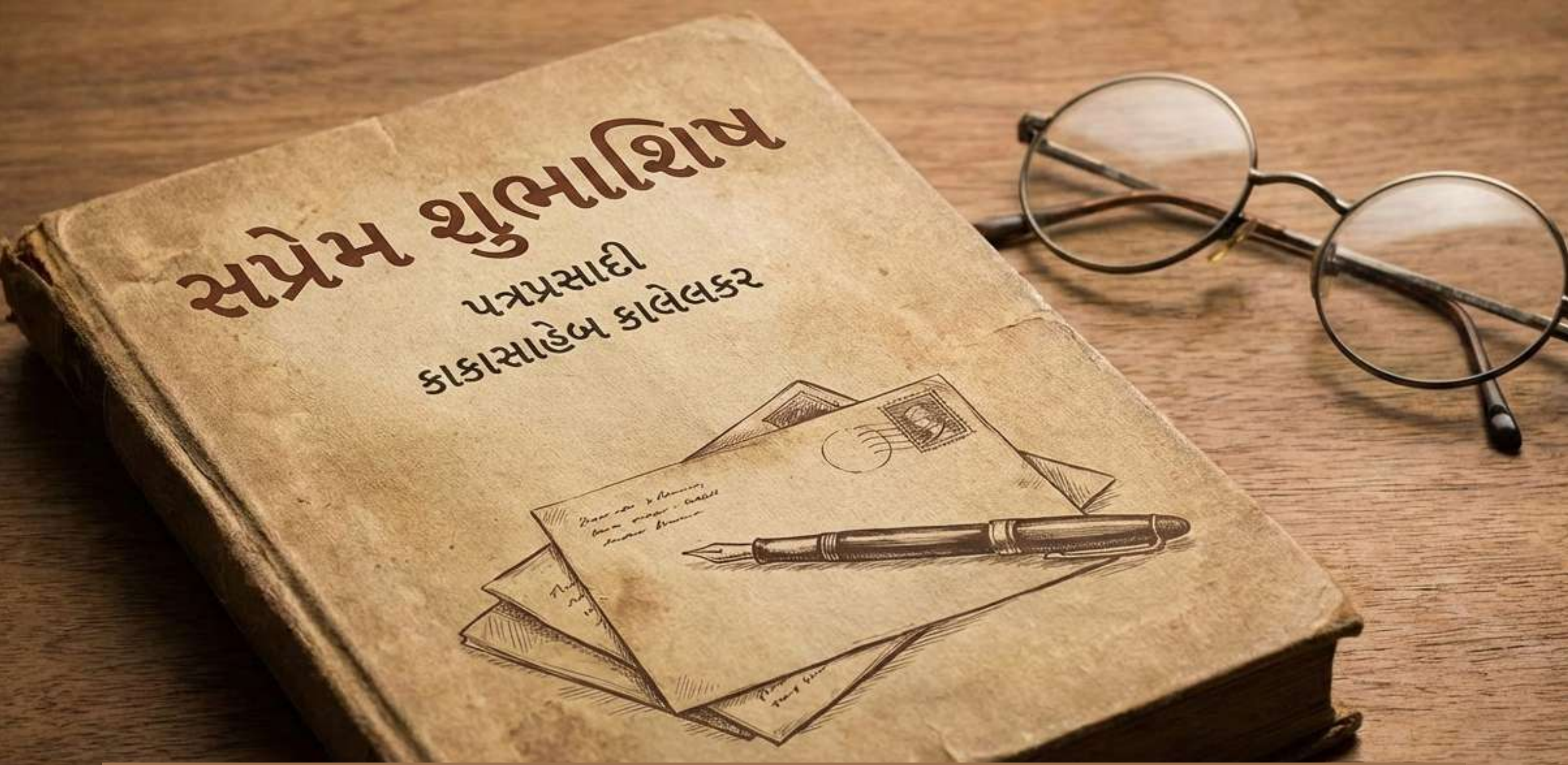

કાકાસાહેબ ગાંધીજીથી પ્રભાવિત હતા એની ના પાડી શકાય એમ નથી. કુસુમબહેનને લખેલા પત્રોમાંથી ગાંધીજી વિશેની સમજ પણ પ્રગટ થાય છે, “ગાંધીજીની તપસ્યાનું ફળ કહો કે ઈશ્વરનો અનુગ્રહ કહો, એમની આત્મીયતા વધતી જ ગઈ અને આખી દુનિયા એમની પ્રેમશક્તિના પ્રભાવ તળે આવી આવી જઈ એમને અપનાવી શકી.” (પા. ૧૨) કાકાસાહેબ ‘સવાઈ ગુજરાતી’ શા માટે કહેવાતા હતા, એનાં કારણો એમનાં અન્ય ગદ્યમાંથી તો મળે છે પણ આ પત્રોમાંથી પણ મળે છે. એકએક શબ્દ વિશેની એમની સમજ અને ચિંતન પણ અહીં પ્રગટ થાય છે, કુસુમબહેને એક પત્રમાં એવું લખ્યું હતું, “પુષ્પાબહેન પરના કાગળમાં છેલ્લી બે-ત્રણ લીટીઓ ચિંતનશીલ છે.” (પા. ૨૬) કાકાસાહેબ અહીં ‘ચિંતનશીલ’ શબ્દને પકડીને સમજાવે છે, ‘ચિંતનશીલ’ શબ્દ માણસ માટે જ વપરાય. વાક્યો કે વિચાર માટે નહીં. ‘ચિંતન’ કરવાનું ‘શીલ’ એટલે કે સ્વભાવ જેનો છે તે વ્યક્તિ ‘ચિંતનશીલ’ કહેવાય છે.

કુસુમબહેન તરફથી કાકાસાહેબને નિયમિત પત્રો ન મળે તો એની પ્રતીક્ષા એમને રહે છે અને એ માટે વારંવાર ટકોર પણ કરે છે. કાકાસાહેબને લાગે છે, કે એમની સાથેના બધા પત્રો લખવામાં કંજૂસ છે. મુંબઈ, નવીદિલ્હી, જાપાન વગેરે સ્થળોએથી કે આગગાડીમાંથી કે વિમાનમાંથી આ પત્રો કાકાસાહેબે લખ્યા છે. કુસુમબહેનનો પ્રત્યુત્તર ન આવે કે પત્ર ન આવે તો કાકાસાહેબ આવો પ્રશ્ન પણ કરે છે, “એ દરમિયાન મારે નામે લખવાનું તને કશું ન સૂઝ્યું?” (પા. ૩૧) ‘ગુરુભક્તિમાં રહેલાં જોખમો’ નામના પત્રમાં ‘યજમાન’ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ વિશે એમણે કરેલું ચિંતન જુઓ : “શંકા જાય છે કે ઉર્દૂ શબ્દ ‘મેજબાન’ એટલે કે મહેમાન-નવાજી કરનાર ગૃહપતિ ઉપરથી જ ‘યજમાન’ શબ્દ ઉપજાવી કાઢવામાં આવ્યો હશે.” (પા. ૮૫) ગાંધીજીએ એમને ‘સવાઈ ગુજરાતી’ કહ્યા અને પોતે પોતાની ઉંમરની કદર ગણે છે. બ્રહ્મચર્ય વિશેના વિચારો કે ઉત્તમ શિક્ષકના ગુણો વિશે કાકાસાહેબે જે લખ્યું છે એ આજે પણ પ્રસ્તુત બની રહે એમ છે. કાકાસાહેબના અવસાનના ૪૦ વર્ષ પછી આ ૧૧૧ પત્રોનો સંગ્રહ પ્રગટ થાય છે. ખાસ કરીને ગુરુ-શિષ્યનો સંબંધ આ પત્રોમાંથી નિર્વ્યાજ રીતે પ્રગટ થાય છે. કાકાસાહેબ દરેક પત્રના અંતે ‘સપ્રેમ શુભાશિષ’ લખતા, એ પરથી આ પત્રસંગ્રહનું શીર્ષક પણ ‘સપ્રેમ શુભાશિષ’ રાખ્યું છે.

[સપ્રેમ શુભાશિષ (ચિ. કુસુમને કાકાસાહેબે લખેલા પત્રો). એપ્રિલ ૨-૨૨. ગાંધી હિન્દુસ્તાની સાહિત્ય સભા, રાજઘાટ, નવીદિલ્હી. મૂ. રૂ. ૪૦૦]

જિતેન્દ્ર ઢેબરીયા

નેપાળ હાલમાં એક મોટી રાજકીય અને સામાજિક ઉથલપાથલમાંથી પસાર થઇ રહ્યું છે. સરકારે અચાનક ફેસબુક, યુટ્યુબ અને એક્સ (ટ્વિટર) સહિતના સોશિયલ મીડિયા પ્લેટફોર્મ પર પ્રતિબંધ મૂક્યો. આ પગલું સરકારના દૃષ્ટિકોણે કાનૂની અને વહીવટી જરૂરિયાત માટે હતું, પરંતુ સામાન્ય નાગરિકો, ખાસ કરીને યુવાનો માટે આ તેમના અવાજને દબાવવાનો પ્રયાસ લાગ્યો. નેપાળમાં યુવાનોની સંખ્યા અડધીથી વધુ છે, અને આ પેઢી ડિજિટલ માધ્યમોથી વિશ્વ સાથે જોડાયેલી છે. તેમના માટે સોશિયલ મીડિયા ફક્ત મનોરંજનનું સાધન નથી, પરંતુ પોતાની ઓળખ, ચર્ચા અને વિરોધ વ્યક્ત કરવાનો મુખ્ય મંચ છે. આ કારણસર, પ્રતિબંધ બાદ થોડી જ વારમાં યુવાનો રસ્તા પર ઉતર્યા. શરૂઆતના દિવસોમાં શાંતિપૂર્ણ દેખાવો થયા, પરંતુ પોલીસ દ્વારા લાઠીચાર્જ, આંસુગેસ અને અમુક કિસ્સાઓમાં બંદૂકના ઉપયોગથી પરિસ્થિતિ ઉગ્ર બની ગઈ. ટૂંક સમયમાં આ આંદોલન ફક્ત સોશિયલ મીડિયા પ્રતિબંધ વિરુદ્ધનું નહોતું રહ્યું, પરંતુ ભ્રષ્ટાચાર, સગાવાદ, બેરોજગારી અને રાજકીય અયોગ્યતા સામેનો મોટો અવાજ બની ગયું. આંદોલનમાં ઘણી જાહેર અને ખાનગી ઇમારતોમાં તોડફોડ કરવામાં આવી અથવા આગ લગાવવામાં આવી. 31 થી વધુ લોકોનાં મોત થયા અને ઘણા લોકો ઘાયલ થયા (Reuters, 2025; AP News, 2025). અંતે વડાપ્રધાન કે.પી. શર્મા ઓલીએ રાજીનામું આપવું પડ્યું, વચગાળાની સરકારની રચના થઇ છે, ભ્રષ્ટાચાર સામે મજબૂત ચહેરા રહેલા સુશીલા કર્કીને વચગાળાની સરકારના વડાપ્રધાનની જવાબદારી સોંપવામાં આવી છે. જોકે કર્કી માટે ભવિષ્યનો રસ્તો સરળ નહિ જ હોય. આ ઘટનાઓથી એ સાબિત થઇ રહ્યું છે કે ફક્ત નેતૃત્વ પરિવર્તનથી મૂળગત બદલાવ આવશે નહિ, લોકશાહી માટે કામ કરતી સંસ્થાઓને મજબૂત બનાવવી અને તેને ટકાવી રાખવા સતત પ્રયત્ન કરવા એ અગત્યની બાબત છે.

વિરોધની શરૂઆત અને હિંસા:

આ આંદોલનની શરૂઆત સરકાર દ્વારા સોશિયલ મીડિયા પર મુકવામાં આવેલ પ્રતિબંધથી થઇ. સરકારે સોશિયલ મીડિયા પર પ્રતિબંધ મૂકતાં જ યુવાનોને લાગ્યું કે તેમના અવાજને દબાવવામાં આવી રહ્યો છે. યુવાનો રસ્તા પર ઊતર્યા અને પોલીસે લાઠીચાર્જ, આંસુગેસ અને જીવતા કારતૂસનો પણ ઉપયોગ કર્યો, પરિણામે આંદોલન વધુ ઉગ્ર બન્યું. સામાજિક વિચારકો કહે છે કે સત્તા દ્વારા થતો બળ પ્રયોગ ઘણીવાર આંદોલનને વધુ મજબૂત બનાવે છે, અને એ જ નેપાળમાં થયું. સરકારી કચેરીઓ અને જાહેર ઇમારતો સળગાવી દેવાની ઘટનાઓ, તે સમાજના સામૂહિક અસંતોષનું પ્રતીક છે.

યુવાનો અને સામૂહિક ચેતના

નેપાળની અડધીથી વધુ વસ્તી 30 વર્ષથી ઓછી ઉંમરની છે. આ આંદોલનથી સાબિત થાય છે કે યુવાનો હવે ફક્ત ભવિષ્યના નાગરિક નથી, પરંતુ આજના પરિવર્તનના મુખ્ય સૂત્રધાર છે. કાર્લ માનહાઇમ (1928)ના મત મુજબ, દરેક પેઢી પોતાની પેઢીય ચેતના (Generational Consciousness) વિકસાવે છે, અને નેપાળની ‘Gen Z’ એ આ ચેતનાને એક સામૂહિક શક્તિમાં રૂપાંતરિત કરી છે.

આ ઉપરાંત “નેપો કિડ્સ” — રાજકીય નેતાઓના બાળકોને મળતા ખાસ ફાયદા — સામેનો તેમનો વિરોધ અસમાનતા અને ન્યાયના અભાવનું પ્રતીક છે. યુવાનોનું આંદોલન દર્શાવે છે કે જ્યારે સંસ્થાઓ પારદર્શિતા અને ન્યાય આપવા નિષ્ફળ જાય છે, ત્યારે યુવાનો ખુદ સામાજિક પરિવર્તન માટે મંચ ઊભો કરી શકે છે. આંદોલન એ પણ યાદ અપાવે છે કે ડિજિટલ યુગમાં યુવાનો માત્ર વપરાશકર્તા (Consumers)નથી, પરંતુ વિચાર, ચર્ચા અને વિરોધના સર્જક પણ બની શકે છે.

યુવાનો દ્વારા તાજેતરનાં વર્ષોમાં કરવામાં આવેલ આંદોલનોને ધ્યાનમાં રાખીયે તો સમજાય છે કે તેમના દ્વારા કરવામાં આવી રહેલ 'નવા આંદોલનો' (New Movements)ને જુના ચશ્માંમાંથી સમજી શકાય તેમ નથી. થોડાં વર્ષો પહેલા થયેલ 'આરબ સ્પ્રિંગ' (Arab Spring)ના આંદોલનો હોય, બાંગ્લાદેશમાં થયેલ સત્તા પરિવર્તન માટેનું આંદોલન હોય કે નેપાળનું આંદોલન, યુવાનો જુના નેતૃત્વ અથવા જૂની વ્યવસ્થાઓથી ખુશ નથી અને તે બદલાવને લાવવા માટે સક્રિય પણ છે.

'Gen Z'ને સમાજથી વિખુટા પડેલા અને સામાજિક બાબતોથી અલિપ્ત થઈને 'Virtual World'માં રાચતી પેઢી તરીકે વખોડવામાં આવે છે. પરંતુ આ આંદોલનો દર્શાવે છે કે આ પ્રકારના આરોપો સાચા નથી.

નેતૃત્વ પરિવર્તન અને સંસ્થાગત નબળાઈ

વડાપ્રધાન કે.પી. શર્મા ઓલીએ અંતે રાજીનામું આપવું પડ્યું અને પ્રતિબંધ પાછો ખેંચાયો. પરંતુ આ ઘટના એ સ્પષ્ટ કરે છે કે નેતૃત્વ બદલવું પૂરતું નથી. નેપાળ જેવા દેશમાં, જ્યાં છેલ્લા બે દાયકામાં વારંવાર સરકારો પડી અને નવી ઉઠી, ત્યાં લોકશાહીની સાચી શક્તિ સંસ્થાઓની મજબૂતી પર આધારિત છે.

સમાજમાં સામાજિક ગતિશીલતા ઝડપથી વધે અને સંસ્થાઓ તે દબાણ સહન ન કરી શકે, તો રાજકીય ક્ષય થાય છે. નેપાળમાં યુવાનોના વધતા અવાજ સામે સંસદ, ન્યાયવ્યવસ્થા અને રાજકીય પાર્ટીઓ પૂરતી જવાબદાર અને પારદર્શક સાબિત થઇ શકી નથી.

તેથી જરૂરી છે કે સંસ્થાઓને વધુ સ્વતંત્રતા, પારદર્શિતા અને જવાબદારી આપવામાં આવે. ફક્ત વ્યક્તિગત રાજીનામાં નહિ, પણ નીતિ-સ્તરે ફેરફારથી જ લોકશાહી મજબૂત બની શકે.

વચગાળાની સરકાર માટે આ પડકાર ખુબ જ મોટો છે, કારણકે સંસ્થાકીય બદલાવ માટે અન્ય બદલાવ અનિવાર્ય છે.

આ બદલાવ નવા સામાજિક-રાજકીય મૂલ્યોથી લઈને સરકારી કાર્યપ્રણાલી અથવા કાયદાકીય બદલાવ સુધીના લાંબા ગાળાના બદલાવ હોઇ શકે છે.

ગાંધીય દૃષ્ટિકોણ

આ આંદોલનને ગાંધીના દૃષ્ટિકોણથી જોઈએ તો ગાંધીજી આ આંદોલનના હિંસક પ્રદર્શનો સાથે ક્યારેય સહમત ના થાય, તેમના માટે સાધન શુદ્ધિ મુખ્ય બાબત રહી હતી. પરંતુ આ પરિસ્થિતિ કેમ સર્જાઈ અને તેમાં રાજકીય નેતૃત્વ કક્ષાએ થયેલ 'મૂલ્ય હ્રાસ'ને ગાંધીજીના સત્ય, અહિંસા અને જાહેર જીવનમાં મૂલ્ય પરાયણતાના સંદર્ભમાં મુલવણી કરવી અનિવાર્ય છે. ગાંધીજી માટે આંદોલન ફક્ત વિરોધ કરવાનો માર્ગ નહોતો, પરંતુ પોતાને અને સમાજને સુધારવાનો અવસર હતો. તેઓ માનતા હતા કે સાચું આંદોલન ત્યારે જ સફળ બને છે જ્યારે તે સત્ય, અહિંસા અને નૈતિક મૂલ્યો પર આધારિત હોય (Gandhi, 1927). નેપાળના યુવાનો માટે આ વિચાર અગત્યનો છે, કારણ કે તેમનું લક્ષ્ય ફક્ત નેતૃત્વ બદલવાનો નથી, પરંતુ રાજકારણને વધુ પારદર્શક અને ન્યાયી બનાવવાનો છે. ભારતના યુવાનો માટે પણ આ સંદેશ તેટલો જ ઉપયોગી છે. ગાંધીજી માટે રાજકીય બદલાવનો અર્થ સત્તા હસ્તાંતરણ નહીં પરંતુ નૈતિક પુનર્નિર્માણ હતો — જ્યાં રાજકારણમાં સત્ય અને સેવા મુખ્ય મૂલ્યો બને (Gandhi, 1947).

ભારત માટે પાઠ

આંદોલન ભારત માટે પણ મહત્ત્વપૂર્ણ છે, કારણ કે અહીં પણ ભ્રષ્ટાચાર, રોજગારીની અછત અને સગાવાદ જેવા પડકારો છે. ભારતની યુનિવર્સિટીઓમાં યુવાનો ચર્ચા મંડળો, વિદ્યાર્થી સંઘો અને ચર્ચા ફોરમ દ્વારા નીતિ-વિષયક ચર્ચાઓ આગળ ધપાવી શકે છે. શહેરી યુવાનો ટેક્નોલોજી, સ્ટાર્ટઅપ્સ અને સોશિયલ પ્રોજેક્ટ્સ દ્વારા રોજગારી ઊભી કરી શકે છે, જ્યારે ગ્રામ્ય યુવાનો સ્થાનિક ઉદ્યોગોને મજબૂત કરી શકે છે. ભવિષ્યમાં ભારતમાં આવી વિધ્વંસાત્મક ઘટનાઓને અટકાવવા માટેના કાર્યક્રમો-વ્યવસ્થાઓ ગોઠવવી અનિવાર્ય છે. જેમ કે વિદ્યાર્થી ચર્ચા મંડળો, જ્યાં ન્યાય અને પારદર્શિતા પર ખુલ્લી ચર્ચા થાય; અહિંસક-પોતાની માંગણી અંગેના સર્જનાત્મક કાર્યક્રમો માટે તાલીમ વર્કશોપ્સ, જેનાથી યુવાનો શાંતિપૂર્ણ વિરોધના માર્ગો શીખે; સમાજસેવા કાર્યક્રમો, જ્યાં ગ્રામ્ય અને શહેરી બંને યુવાનો સમસ્યાઓના નાના પરંતુ લાંબાગાળાના ઉકેલ શોધી શકે; અને સોશિયલ મીડિયા અભિયાન, જેના દ્વારા આંદોલનના શાંતિપૂર્ણ અને સર્જનાત્મક ઉકેલ અંગેના સંદેશાઓ ઝડપથી ફેલાવી શકાય. આ રીતે ભારતના યુવાનો પોતાની શક્તિને ફક્ત અસંતોષમાં નહિ, પરંતુ સકારાત્મક પરિવર્તનમાં વાપરી શકે છે.

નિષ્કર્ષ: નેપાળનું 2025ના આંદોલન બતાવે છે કે લોકશાહી માત્ર કાયદા અને બંધારણથી નથી ચાલતી; તે ન્યાય, પારદર્શિતા અને યુવાનો-નાગરિકોની સક્રિય ભાગીદારી પર આધારિત છે. આંદોલનમાં દેખાયું કે યુવાનો હવે ફક્ત પ્રેક્ષક નથી, તેઓ પોતે પરિવર્તનના કેન્દ્ર બની શકે છે. પરંતુ આ સાથે જ એક ચેતવણી પણ છે કે જો અસંતોષને દબાવવામાં આવે, તો તે હિંસા અને વિધ્વંસમાં ફેરવાઈ શકે છે. સમાજશાસ્ત્રીય દૃષ્ટિકોણથી જોવામાં આવે, તો આંદોલન એ દર્શાવે છે કે જ્યારે પેઢીગત ચેતના જાગે છે અને સંસ્થાઓ તેનો પ્રતિસાદ આપી શકતી નથી, ત્યારે રાજકીય ક્ષય અને અસંતોષ અનિવાર્ય બની જાય છે. જે લાંબાગાળાનાં પરિણામો અને પરિમાણોનું સર્જન કરે છે. અંતે, આંદોલનનો સાચો પાઠ એ છે કે યુવાનો સમાજની સૌથી મોટી શક્તિ છે. તેઓ જ્યારે અહિંસા, સત્ય અને સર્જનાત્મકના માર્ગે આગળ વધે છે, ત્યારે તેઓ ફક્ત રાજકીય નેતૃત્વને બદલતા નથી, પરંતુ સંસ્થાઓને મજબૂત કરે છે અને લોકશાહી માટે નવી આશા ઊભી કરે છે. આજે સવાલ ફક્ત “કોણ શાસન કરશે?” નથી, પરંતુ “શાસન કેવી રીતે ચાલશે?” એ છે — અને તેનો જવાબ યુવાનો અને નાગરિકોની અહિંસક શક્તિ, સંવાદ અને જવાબદારીમાં જ છે.

પ્રવૃત્તિ • દર્પણ

-શ્રી અદ્વૈતા દવે

વિદ્યાર્થીઓની સિદ્ધિઓ અને પ્રવૃત્તિઓ

બાળકોનો રમતોત્સવ: કુમાર વિનય મંદિર (06/01/2026)

ગૂજરાત કુમાર વિનય મંદિરના મેદાનમાં 'રમતગમત દિવસ'ની ઉજવણી થઈ, જેમાં ભૂલકાંઓએ પોતાના ઉત્સાહથી વાતાવરણ ગજવી મૂક્યું હતું. હાર-જીતને બાજુ પર મૂકી, બાળકોએ અદભુત ટીમવર્ક અને આનંદ સાથે વિવિધ રમતોનો આનંદ માણ્યો હતો. આ રમતોત્સવમાં બાળકોએ ખેલદિલી અને ઉત્સાહ સાથે દરેક પ્રવૃત્તિઓમાં ભાગ લીધો હતો.

SWAYAM ઓનલાઇન કોર્સ અંગે માર્ગદર્શન (07/01/2026)

વિવિધ વિભાગના વિદ્યાર્થીઓ માટે એક ખાસ તાલીમ કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. જેમાં વિદ્યાર્થીઓને ભારત સરકારના 'સ્વયં' (SWAYAM) પોર્ટલ પર ઓનલાઇન કોર્સ કેવી રીતે કરવા અને શિક્ષણની નવી તકો કેવી રીતે ઝડપવી તે અંગે વિસ્તૃત જાણકારી આપવામાં આવી હતી.

પ્રકૃતિ અને ઈતિહાસનો સંગમ : કુમાર વિનય મંદિરનો શૈક્ષણિક પ્રવાસ (12/01/2026)

ગૂજરાત કુમાર વિનય મંદિરના ધોરણ ૯ થી ૧૨ના ૫૨ વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્તર ગુજરાતના ઐતિહાસિક સ્થળોની મુલાકાત લીધી. મહુડી અને વડનગરના ભવ્ય વારસાને માણવા સાથે વિદ્યાર્થીઓએ તારંગાના અત્રિ આશ્રમમાં ટેન્ટમાં રાત્રિ રોકાણ અને હિલ ટ્રેકિંગનો રોમાંચક અનુભવ પણ લીધો હતો.

જીવદયાનું ઉત્તમ ઉદાહરણ: અબોલ પક્ષીનો જીવ બચાવ્યો (15/01/2026)

માનવતા અને કરુણાના પાઠ ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના વિદ્યાર્થીઓએ ચરિતાર્થ કરી બતાવ્યા હતા. ઉત્તરાયણ પર્વ દરમિયાન પતંગના દોરામાં ફસાયેલા એક પક્ષીને વિદ્યાર્થીઓએ સમયસૂચકતા વાપરીને બચાવી લીધું. વિદ્યાર્થીઓનાં તાત્કાલિક સહયોગથી આ પક્ષીને નવું જીવન મળ્યું, જે આપણા સૌ માટે ગર્વની વાત છે.

GSET પરીક્ષામાં સફળ છાત્રોનું બહુમાન (20/01/2026)

ડિસેમ્બર ૨૦૨૫ની GSET પરીક્ષામાં ઝળકેલા તેજસ્વી તારલાઓને માનનીય કુલપતિ શ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલે રૂબરૂ મળી અભિનંદન સહ ઉજ્જવળ ભવિષ્યની શુભકામનાઓ પાઠવી. શૈક્ષણિક સિદ્ધિના આ શિખર સર કરનાર ભાવિ અધ્યાપકો અને સંશોધકોને ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ પરિવાર તરફથી ઘણી-ઘણી શુભેચ્છાઓ!

નેતાજી સુભાષચંદ્ર બોઝ જયંતિની ઉજવણી (23/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ, અમદાવાદના ઇતિહાસ અને સંસ્કૃતિ વિભાગના રાષ્ટ્રીય સેવા યોજના એકમ દ્વારા નેતાજી સુભાષચંદ્ર બોઝની જયંતિ શ્રદ્ધા અને સંકલ્પના માહોલમાં ઉજવાઈ. તેમના ત્યાગ, અનુશાસન અને માતૃભૂમિ પ્રત્યેના સમર્પણની વાતોએ વિદ્યાર્થીઓને સેવા અને કર્તવ્યના માર્ગે આગળ વધવાની પ્રેરણા આપી.

ખેલ મહાકુંભમાં વિદ્યાપીઠના ખેલાડીઓનું ગૌરવ (28/01/2026)

ગુજરાત સરકાર આયોજિત ખેલ મહાકુંભની રાજ્યકક્ષાની એથ્લેટિક સ્પર્ધામાં ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના બે ખેલાડીઓએ ઉત્તમ પ્રદર્શન કર્યું. BPES સત્ર 2ની ટીશા બાવળિયાએ પોલ વોલ્ટમાં 2.20 મીટરની કૂદ સાથે ગોલ્ડ મેડલ મેળવ્યો, જ્યારે BPED સત્ર 4ના મોહંમદ કૈફે 100 મીટર દોડ 11.09 સેકન્ડમાં પૂર્ણ કરી બ્રોન્ઝ મેડલ મેળવ્યો. બંને ખેલાડીઓએ સંસ્થાનું ગૌરવ વધાર્યું હતું.

પરિસંવાદ અને જ્ઞાન વિસ્તાર

શિક્ષણ અને ટેકનોલોજીનો સમન્વય : એફ.ડી.પી.નો પ્રારંભ (06/01/2026)

ડિસેમ્બર ૨૦૨૫ની GSET પરીક્ષામાં ઝળકેલા તેજસ્વી તારલાઓને માનનીય કુલપતિ શ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલે રૂબરૂ મળી અભિનંદન સહ ઉજ્જવળ ભવિષ્યની શુભકામનાઓ પાઠવી. શૈક્ષણિક સિદ્ધિના આ શિખર સર કરનાર ભાવિ અધ્યાપકો અને સંશોધકોને ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ પરિવાર તરફથી ઘણી-ઘણી શુભેચ્છાઓ!

વિકસિત ભારત 2047 : કૃષિ અને ફૂડ પ્રોસેસિંગમાં નવતર પ્રયોગો (09/01/2026)

વિકસિત ભારત 2047ના સંકલ્પને સિદ્ધ કરવા કૃષિ અને ફૂડ પ્રોસેસિંગ ક્ષેત્રે ટેકનોલોજીના ઉપયોગ અંગેનો બે દિવસીય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો. જેમાં આર્ટિફિશિયલ ઇન્ટેલિજન્સ (AI) અને ડેટા આધારિત ખેતી જેવા આધુનિક વિષયો પર ગહન ચર્ચાઓ થઈ. સંશોધકો અને વિદ્યાર્થીઓના સહિયારા પ્રયાસો આત્મનિર્ભર ભારત અને ગ્રામીણ સશક્તિકરણની દિશામાં એક મજબૂત ડગલું સાબિત થશે.

'એકત્ર જ્ઞાનસંવાદ' : સાહિત્ય અને ટેકનોલોજીનો સેતુ (20/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના ગુજરાતી વિભાગ અને એકત્ર ફાઉન્ડેશન (USA) દ્વારા 'એકત્ર જ્ઞાનસંવાદ' કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. જેમાં વિશ્વના શ્રેષ્ઠ ગ્રંથોનો સાર અને જીવનચરિત્રોને AI (આર્ટિફિશિયલ ઇન્ટેલિજન્સ) ના માધ્યમથી ગુજરાતી ઑડિયો સ્વરૂપે લોકો સુધી પહોંચાડવાની નવીન દિશા રજૂ થઈ.

આ પ્રસંગે કુલપતિ શ્રી હર્ષદભાઈ પટેલ, ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના પ્રમુખ હર્ષદ ત્રિવેદી, જાણીતાં સર્જક ઉષા ઉપાધ્યાય, એકત્ર ફાઉન્ડેશનના અતુલ રાવલ, ભાષાવિજ્ઞાની અરવિંદ ભાંડારી ખાસ ઉપસ્થિત રહ્યાં હતાં 'જ્ઞાનગોષ્ઠિ' દ્વારા વૈશ્વિક જ્ઞાનધારાને માતૃભાષામાં વહેતી કરવાનો આ પ્રયાસ ભાષા પ્રેમીઓ માટે આકર્ષણનું કેન્દ્ર રહ્યો.

સ્ટાર્ટઅપ ઇકોસિસ્ટમ પર પ્રેરક વ્યાખ્યાન (21/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના SSIP સેલ દ્વારા 21 જાન્યુઆરીએ "નવી સ્ટાર્ટઅપ યુક્તિઓ અને ઇકોસિસ્ટમ" વિષય પર વ્યાખ્યાન યોજાયું હતું. વિષય નિષ્ણાત શ્રી જીતેન ઠક્કરે વિદ્યાર્થીઓને પરંપરાગત ચીલાથી હટીને નવીન ઉદ્યોગસાહસિકતા તરફ કેવી રીતે વળવું અને આજના સમયમાં સ્ટાર્ટઅપનું મહત્ત્વ શું છે, તે અંગે રસપ્રદ અને પ્રેરક માર્ગદર્શન આપ્યું.

ગાંધીવિચારનું વૈશ્વિક પ્રસારણ : આંતરરાષ્ટ્રીય કોર્સની પૂર્ણાહુતિ (23/01/2026)

'ગાંધીયન નોન-વાયલન્સ: થિયરી એન્ડ એપ્લિકેશન' વિષય પરના આંતરરાષ્ટ્રીય કોર્સના સહભાગીઓને પ્રમાણપત્ર એનાયત કરવામાં આવ્યા. વિવિધ દેશોમાંથી આવેલા વિદ્યાર્થીઓએ કુલપતિશ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલ સાથે સંવાદ કરી પોતાના અભ્યાસક્રમમાં સમાવિષ્ટ અહિંસાના વૈશ્વિક પ્રસાર અંગેના પોતાના અનુભવો વહેંચ્યા. આ પ્રસંગે ગાંધીવિચારને વિશ્વના ખૂણેખૂણે પહોંચાડવાનો ગૂજરાત વિદ્યાપીઠનો સંકલ્પ વધુ દૃઢ થયો. વિભિન્ન દેશોના વિદ્યાર્થીઓએ ગાંધીવિચાર સંબંધિત અભ્યાસક્રમ પૂર્ણ કરી અહિંસા અને માનવતા અંગે ઊંડો અભિગમ મેળવ્યો. આ અનુભવે ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના એ લક્ષ્યને નવી દિશા આપી, જે વિશ્વ સુધી ગાંધીજીના શાશ્વત સંદેશને પહોંચાડવાનું છે.

ઉત્સવો અને તહેવારોની ઉજવણી

૭૭મા પ્રજાસત્તાક પર્વની ઉજવણી (26/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠમાં ૭૭મા પ્રજાસત્તાક પર્વની આન-બાન-શાન સાથે ઉજવણી કરવામાં આવી હતી. ધ્વજવંદન બાદ ગૂંજી ઉઠેલા રાષ્ટ્રગીત અને ત્રિરંગાની સલામીએ સૌમાં દેશભક્તિનો સંચાર કર્યો હતો. રાષ્ટ્રપ્રેમ અને સંકલ્પબદ્ધતાના સંગમ સમાન આ પ્રસંગે સમગ્ર ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ પરિવાર હર્ષોલ્લાસ સાથે જોડાયો હતો.

અન્ય પ્રવૃત્તિઓ

સમાજસેવા પુરસ્કાર અર્પણ (01/01/2026)

મહાદેવ દેસાઈ ઉપાસના ખંડમાં મહાદેવભાઈ દેસાઈની જન્મજયંતીના અવસરે આયોજિત કાર્યક્રમમાં માનનીય કુલપતિશ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલની અધ્યક્ષતામાં શ્રી ભગવાનદાસ પટેલને 'મહાદેવ દેસાઈ સમાજસેવા પુરસ્કાર' એનાયત કરવામાં આવ્યો. સાથે જ વિદ્યાપીઠના તેજસ્વી છાત્રો માટે સુવર્ણચંદ્રક આપનાર દાતાઓનું પણ સન્માન કરવામાં આવ્યું. 'આપણું કાર્ય એ જ એમનો વારસો છે' - આ કાર્યક્રમે મહાદેવભાઈની જીવંત વિચારધારાનો સાક્ષાત્કાર કરાવ્યો.

ગણિત તાલીમ શિબિર અને વર્કશોપ (01/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ, સેન્ટ ઝેવિયર્સ કોલેજ અને ગુજરાત ગણિત મંડળના સાથ-સહકારથી ગણિત વિષય પર તાલીમ શિબિરોનું આયોજન થયું. આઠ દિવસ સુધી ચાલેલી આ શિબિરમાં ધોરણ ૯ થી ૧૧ ના ઓલિમ્પિયાડ માટે પસંદ થયેલા વિદ્યાર્થીઓ અને સ્નાતક કક્ષાના છાત્રોએ ભાગ લીધો. ડૉ. ઉદયન પ્રજાપતિના સંકલન હેઠળ યોજાયેલ આ કાર્યશાળામાં દેશભરના નામી ગણિતજ્ઞોએ ગુજરાત અને રાજસ્થાનના વિદ્યાર્થીઓને માર્ગદર્શન આપ્યું હતું.

ક્રિકેટ અને બેડમિન્ટનમાં રનર્સ-અપ (12/01/2026)

સુરતની વીર નર્મદ દક્ષિણ ગુજરાત યુનિવર્સિટી ખાતે આયોજિત 'ગુજરાત રાજ્ય આંતર-યુનિવર્સિટી સ્ટાફ સ્પોર્ટ્સ મીટ' માં ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના પરિવારે ઝળહળતી સફળતાઓ મેળવી. ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ ટીમે ક્રિકેટ અને બેડમિન્ટન બંને રમતોમાં રનર્સ-અપનું સ્થાન પ્રાપ્ત કરીને વિદ્યાપીઠની ખેલદિલી અને ટીમવર્કનું ઉત્કૃષ્ટ ઉદાહરણ પૂરું પાડ્યું છે.

સાબરમતીના નીરે 'યોગા ઓન ક્રૂઝ': એક નવીન પહેલ (16/01/2026)

શિયાળાની વહેલી સવારે ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના યોગ વિભાગ દ્વારા સાબરમતી રિવરફ્રન્ટ ખાતે 'યોગા ઓન ક્રૂઝ' કાર્યક્રમનું સુંદર આયોજન થયું હતું. અમદાવાદમાં પ્રથમવાર ક્રૂઝ પર યોગાભ્યાસનો આ ઐતિહાસિક પ્રયાસ પર્યાવરણ અને જળ સંરક્ષણનો સંદેશ આપવા માટે કરવામાં આવ્યો હતો. પ્રાકૃતિક વાતાવરણમાં યોગ દ્વારા શારીરિક અને માનસિક સ્વાસ્થ્યનો મંત્ર વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહભેર ઝીલ્યો હતો.

સેવા અને સંકલ્પનો સંગમ (18/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના કુલાધિપતિશ્રી તથા ગુજરાત અને મહારાષ્ટ્ર રાજ્યના માનનીય રાજ્યપાલશ્રી આચાર્ય દેવવ્રતજીના જન્મદિવસે આયોજિત રક્તદાન શિબિરમાં વિદ્યાપીઠના ૧૧૨ વિદ્યાર્થીઓ અને અધ્યાપકોએ રક્તદાન કરી સેવાનું ઉત્તમ ઉદાહરણ પૂરું પાડ્યું. આ પ્રસંગે રાજ્યપાલશ્રી, લેડી ગવર્નર સુશ્રી દર્શનાદેવીજી તથા માનનીય મુખ્યમંત્રી શ્રી ભૂપેન્દ્રભાઈ પટેલની ગરિમામયી હાજરીએ રક્તદાતાઓનો ઉત્સાહ વધાર્યો હતો.

ગુજરાત નઈ તાલીમ સંઘની કારોબારી બેઠક (22/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ ખાતે 'ગુજરાત નઈ તાલીમ સંઘ'ની વર્ષ ૨૦૨૫-૨૬ની દ્વિતીય કારોબારી બેઠક મળી. સંઘના માનનીય પ્રમુખ અને કેન્દ્રીય મંત્રીશ્રી ડૉ. મનસુખભાઈ માંડવિયાના અધ્યક્ષસ્થાને યોજાયેલી આ બેઠકમાં શિક્ષણના પાયાના વિચારો અને ભવિષ્યના આયોજન અંગે ગહન ચર્ચાઓ કરવામાં આવી હતી.

ICT ફેકલ્ટીના નૂતન ભવનનું નામકરણ : 'સ્વસ્તિક ભવન' (22/01/2026)

પુનઃનિર્મિત સ્વસ્તિક ભવનનું માનનીય કેન્દ્રીય મંત્રી શ્રી ડૉ. મનસુખભાઈ માંડવિયાએ કુલપતિશ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલની ઉપસ્થિતિમાં શાસ્ત્રોક્ત વિધિ સાથે લોકાર્પણ કર્યું. આ ભવન ખાતે આવેલ સ્ટુડિયો ફેસિલિટીની પણ મુલાકાત લીધી હતી, જે વિદ્યાર્થીઓનાં શૈક્ષણિક અને સર્જનાત્મક વિકાસમાં મદદરૂપ બની શકે એમ છે.

વસંતની સુગંધ સાથે કવિ સંમેલન (23/01/2026)

વસંતપંચમીના પાવન અવસરે ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના કોચરબ આશ્રમના પ્રાંગણમાં "વસંતની વાંસળી વાગી" કાર્યક્રમ ગુજરાતી વિભાગ દ્વારા યોજાયો. આ નિમિત્તે ભાષાઓ અને સાહિત્ય વિદ્યાશાખાના વિદ્યાર્થીઓએ સ્વયંપાક તૈયાર કર્યો હતો. સાંજે યોજાયેલા કવિ સંમેલનમાં રાજેશ વ્યાસ 'મિસ્કીન', ઉષા ઉપાધ્યાય, ભરત જોશી, અશોક ચાવડા, હરદ્વાર ગોસ્વામી

અને ધ્વનિલ પારેખે કાવ્યપાઠ કર્યો હતો. કવિ સંમેલન પૂર્વે કુલપતિ શ્રી હર્ષદભાઈ પટેલ અને કવિ મિત્રોએ સરસ્વતી પૂજન કર્યું હતું. કવિતાની સરવાણી વચ્ચે વસંતનો ઉલ્લાસ પ્રસરી ગયો. માનનીય કુલપતિશ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલની ઉપસ્થિતિએ આ સંધ્યાને વિશેષ સ્મરણીય બનાવી.

ચિંતન અને સહયાત્રાનો આરંભ – ચિંતન શિબિર (24/01/2026)

ગાંધીવિચારધારાના મર્મને જીવંત રાખતી ગૂજરાત વિદ્યાપીઠની 'ચિંતન શિબિર'નો પ્રારંભ માનનીય કુલપતિશ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલના હસ્તે થયો. અમદાવાદ, બોચાસણ, ભાળેલ, દેથલી, ભલાલા અને અંભેટી સહિતના કુલ ૧૧ એકમોના પ્રતિનિધિઓની ઉપસ્થિતિએ આ ત્રણ દિવસીય શિબિરને વિચાર અને સહાનુભૂતિના મંચમાં રૂપાંતરિત કરી.

બાળ સંભાળ સંસ્થાઓ માટે સામાજિક લેખાપરીક્ષણ તાલીમ (26/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠમાં પાંચ દિવસીય "બાળ સંભાળ સંસ્થાઓના સામાજિક લેખાપરીક્ષણ તાલીમ કાર્યશાળા"નું ઉદ્ઘાટન માનનીય કુલપતિશ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલના અધ્યક્ષસ્થાને થયું. આ તાલીમ બાળ અધિકાર, સુરક્ષા અને સર્વાંગી વિકાસ માટેની સંસ્થાની પ્રતિબદ્ધતાનું સશક્ત પ્રતિબિંબ બની.

'રણથંભોર: ફિફ્ટી આઈકોનિક યર્સ'માં વિદ્યાપીઠનું ગૌરવ (30/01/2026)

વાલ્મીક થાપર અને કૈરવ એન્જિનિયર સંપાદિત પુસ્તક 'રણથંભોર: ફિફ્ટી આઈકોનિક યર્સ'માં ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના ડૉ. આલાપ બ્રહ્મભટ્ટ દ્વારા લેવામાં આવેલી 'તરસ છિપાવતાં હરણાં'ની તસવીરને સ્થાન મળ્યું. આ સિદ્ધિ બદલ માનનીય કુલપતિશ્રી ડૉ. હર્ષદ પટેલે તેમને અભિનંદન પાઠવ્યા હતા.

શહીદ દિને સ્વચ્છાંજલિ (30/01/2026)

ગાંધી નિર્વાણ દિવસ નિમિત્તે ગૂજરાત વિદ્યાપીઠમાં સ્વચ્છતા અભિયાનનું આયોજન થયું. સેવકો અને વિદ્યાર્થીઓએ સંકુલ અને આસપાસના વિસ્તારમાં સફાઈ કરી બાપુના આદર્શોને જીવંત રાખવાનો પ્રયાસ કર્યો. શ્રેષ્ઠ કામગીરી બદલ સામાજિક વિજ્ઞાન વિદ્યાશાખા, મુખ્ય કાર્યાલય અને ગૂજરાત કુમાર વિનય મંદિરને ધનરાશિ સાથે સન્માનિત કરવામાં આવ્યા. પ્રાણજીવન વિદ્યાર્થી ભવન ખાતે શ્રદ્ધાંજલિ અને સમૂહ કાંતણ પણ યોજાયું.

પ્રાકૃતિક ખેતી દ્વારા ગ્રામ્ય વિકાસ તરફ ગૂજરાત વિદ્યાપીઠનો સંકલ્પ

દેથલી કેન્દ્રની મુલાકાતે કુલાધિપતિ આચાર્ય દેવવ્રતજી (04/01/2026)

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના કુલાધિપતિ અને રાજ્યપાલશ્રી આચાર્ય દેવવ્રતજીએ દેથલી સ્થિત કૃષિવિજ્ઞાન કેન્દ્રની મુલાકાત લીધી હતી. અહીં યોજાયેલા પ્રાકૃતિક ખેતી સંમેલનમાં તેમણે ખેડૂતોને ઝેરમુક્ત ખેતી કરવા આહવાન કર્યું હતું. તેમણે ગૌશાળાની મુલાકાત લેવાની સાથે રાત્રે ગ્રામજનો સાથે પણ ગોષ્ઠિ કરી હતી.

રાંધેજા કૃષિ વિજ્ઞાન કેન્દ્ર ખાતે પ્રાકૃતિક ખેતીની સમીક્ષા (08/01/2026)

સરદાર વલ્લભભાઈ પટેલ કૃષિ વિજ્ઞાન કેન્દ્ર, રાંધેજાની મુલાકાત ગૂજરાત વિદ્યાપીઠના ટ્રસ્ટીશ્રી ભૂપેન્દ્રસિંહ ચુડાસમા, શ્રી હસમુખભાઈ પટેલ તથા કુલપતિશ્રી ડૉ. હર્ષદભાઈ પટેલે લીધી હતી.. તેમણે કેન્દ્ર પર ચાલી રહેલા પ્રાકૃતિક કૃષિના પ્રયોગોનું નિરીક્ષણ કર્યું અને ખેતી અંગેની પ્રવૃત્તિઓની ઊંડાણપૂર્વક સમીક્ષા કરી માર્ગદર્શન પૂરું પાડ્યું હતું.

દેથલી કેન્દ્રની મુલાકાતે કૃષિ નિષ્ણાતો : ટકાઉ ખેતીની સમીક્ષા (16/01/2026)

કૃષિ વિજ્ઞાન કેન્દ્ર, દેથલી ખાતે એક ઉચ્ચ સ્તરીય મુલાકાત યોજાઈ હતી. ATARI-પુણેના સંયોજક ડૉ. એસ.કે. રોય, મુખ્ય વૈજ્ઞાનિક ડૉ. શાકિર અલી અને AAU-આણંદના ડૉ. શૈલેષ પટેલ સહિતના નિષ્ણાતોએ કેન્દ્રની પ્રવૃત્તિઓ નિહાળી હતી. સીડ હબ, પ્રાકૃતિક ખેતી, જમીન પરીક્ષણ અને ગીર ગાય સંવર્ધન જેવા પ્રોજેક્ટ્સની સમીક્ષા કરી ગ્રામીણ વિકાસના રોડમેપને વધુ મજબૂત બનાવવાની ચર્ચા કરી હતી.

આગામી કાર્યક્રમો

ફેબ્રુઆરી ૨૦૨૬

6 February	'એડવાન્સ ન્યુટ્રિશન એસેસમેન્ટ એન્ડ થેરાપ્યુટિક ન્યુટ્રિશન સ્ટ્રેટેજીસ' પર એક દિવસીય કાર્યશાળાનું આયોજન
6 February	કમ્પ્યુટર વિજ્ઞાન વિભાગના એમ.સી.એ. અભ્યાસક્રમના વિદ્યાર્થીઓ દ્વારા સ્વયંપાક
7 February	અર્થશાસ્ત્ર અને વિજ્ઞાન વિદ્યાશાખા વિદ્યાર્થીઓ દ્વારા સ્વયંપાક
10 February	યોગ વિભાગના વિદ્યાર્થીઓ દ્વારા સ્વયંપાક
13 February	કશ્મીરી યુવા સાંસ્કૃતિક આદાન -પ્રદાન કાર્યક્રમ
17 February	જાણીતા હાસ્યલેખક રતિલાલ બોરીસાગરનું વ્યાખ્યાન
20-22 February	International Conference on Integrative Dimensions of Yoga, Holistic Health, Education, and Indian Knowledge Systems: A Global and Evidence-Based Perspective
21 February	રાષ્ટ્રીય પરિસંવાદ ભાષા અભ્યાસનાં પાસાં વિષય પર આયોજન
22 February	કસ્તૂરબા ગાંધી મેળો

વસંતની વાંસળી વાગી

મલયાનિલોની પીંછી ને રંગો ફૂલોના લઈ,
દોરી રહ્યું છે કોણ આ નકશા વસંતના !